ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।। अथर्व. 5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 37, अंक 31 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 जुलाई, 2014 से रविवार 20 जुलाई, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

श्रावणी पर्व/वेद प्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक आयोजित करें युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित करें

1. यज्ञ के अवसर पर युवा जोड़ों को यजमान अवश्य बनाएं तथा उन्हें आर्यसमाज का सरल साहित्य भेंट करें।
2. वेद कथा के अवसर पर आर्यवीर सम्मेलन व युवा सम्मेलन का आयोजन अवश्य करें।
3. युवाओं के लिए प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम अवश्य आयोजित करें जिससे युवा वर्ग अपनी शंकाओं का समाधान विद्वानों से करा सकें।
4. मंच संचालन के कार्य युवाओं को सौंपे जिससे उन्हें कार्यक्रमों में आने तथा आयोजित करने के लिए उत्साह एवं बल मिल सके।

वैदिक धर्म में स्वाध्याय को प्रत्येक वर्ण और आश्रम व्यवस्था के लिए अनिवार्य और आवश्यक रूप से प्रधान बताया गया है। ब्राह्मण वर्ग और ब्रह्मचर्य आश्रम की कल्पना ही स्वाध्याय के साथ जुड़ी है

रक्षा बन्धन

अर्थात् विद्यार्थियों का स्वाध्याय से विमुख रहना समाज के लिए किसी दृष्टि से भी हितकर नहीं हो सकता।

क्षत्रिय वर्ग अर्थात् देश की रक्षा करने वाले पुलिस और सैन्य बल तथा शासन चलाने वाले उच्चाधिकारी लोग भी यदि स्वाध्यायशील रहें तो देश की आन्तरिक और बाहरी सुरक्षा तथा अनुशासन स्थापित करने में अवश्य ही सहायता मिलेगी। वैश्य वर्ग यदि स्वाध्यायशील रहता है तो देश की व्यापारिक गतिविधियों को सात्विक उन्नति प्राप्त होगी। इसी प्रकार शूद्र वर्ग भी स्वाध्याय के सहारे केवल अपना ही नहीं अपितु अपने आस-पास के समाज को भी सद्व्यवहार के द्वारा सुगन्धित कर सकता है।

इस वर्ष **रक्षा बन्धन (रविवार) 10 अगस्त, 2014** को तथा **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (सोमवार) 18 अगस्त, 2014** को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार समारोह के रूप में मनाया जाता है।

वेद प्रचार समारोह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता। यदि वेद प्रचार समारोह को उत्साहपूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनाया जाए तो ज्ञान गंगा घर-घर में पहुंचाई

हैदराबाद सत्याग्रह के शहीद

जा सकती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाना ही वेद प्रचार समारोह का भी प्रयोजन होना चाहिए।

वेद प्रचार समारोह को सफल बनाने के लिए अपनी सुविधानुसार निम्न उपायों में से अधिकाधिक उपाय किए जा सकते हैं-

1. बृहद यज्ञों का आयोजन (यदि सम्भव हो तो पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर) करें जिसमें आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त, जन सामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए। सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

2. यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन-सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

3. अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार-विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां

67वां स्वाधीनता दिवस समारोह

या लघु सम्मेलन अथवा कार्यशालाएं आयोजित करें। ***'सुखी परिवार कैसे रहें?'*** विषय पर यदि गोष्ठियां आयोजित की जाएं तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

4. वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथाओं का भी आयोजन करें जिससे इन ग्रन्थों के विचारों का लाभ लोगों के धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनीतिक उत्थान के लिए मिल सकें।

5. क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। **इस हेतु सभा से 'एक निमन्त्रण', आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र' एवं 'लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश' उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।**

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

6. आर्यसमाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके 'आत्मावलोकन' अवश्य करें कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधियां सन्तोषजनक हैं? क्या उससे और अधिक कुछ सुधार किया जा सकता है? यदि नहीं, तो उसके कारण और समाधानों पर चर्चा करें।

7. उपरोक्त के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क में उठे तो उसे हमें भी लिखकर भेजें जिससे अन्य आर्य समाजों के सदस्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

– शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादकीय

गंगा-यमुना सफाई अभियान : योजना-यथार्थ एवं क्रियान्वयन-सुझाव

गंगा और यमुना आदि नदियों का भारतीय सांस्कृतिक परिस्थितियों में हमेशा बहुत पवित्र स्थान प्राप्त रहा है। किन्तु आज उनकी स्थिति देखकर जिस दुखः का एहसास होता है उसका वर्णन मुश्किल है। कहीं-कहीं तो उसका रूप गन्दे नाले से भी बदतर हो चुका है। राजनैतिक रूप से इस अवस्था का लाभ सभी दलों ने समय-समय पर लिया, नतीजा सामने है- इसकी सफाई के नाम पर लिया धन- शौचालय निर्माण, घाट निर्माण, भवन निर्माण, कुछ मशीन लगाने, विदेश भ्रमण (अध्ययन टीमों) पर स्वयं किया गया, किन्तु इन नदियों की दुर्दशा बढ़ती ही गई।

धार्मिक जनता ने भी उसमें मृतक शरीरों की राख, पूरा-पूरा शव प्रवाहित करना नहीं छोड़ा और कामना कि ये पवित्र हो जाएं। अपने घर की समस्त बची हुई पूजा सामग्री राख अवशेष/पुस्तक वस्त्र आदि गंगा-यमुना में प्रवाहित करके गंगा मैया से पवित्र होने की कामना करते हैं। बचे हुए फूल, माचिस, अगरबत्ती, धूपबत्ती, रूई, अगरबत्ती, सडे फल आदि पवित्र गंगा में डालकर हाथ जोड़कर उससे प्रतिफल की आशा करना कहां कि बुद्धिमानी है।

रही-सही कसर उन महानुभावों ने पूरी कर दी जिन्होंने इसे पवित्र कार्य के लिए दुग्धाभिषेक का महाभियान चलाया। गंगा की आरती उतारो ओर हजारों लाखों लीटर दूध उसमें बहाकर उसे पवित्र करो – क्या इससे नदियां पवित्र होंगी?

आज इन सबको स्वच्छ निर्मल रखने का फिर से अभियान छेड़ा गया है किन्तु अभी तक जो नजर आ रहा है सारे अभियानों में बडे-नारे-पोस्टर-बैनर, भाषण और संकल्प लेने की होड़, कहीं पर भी ऐसा नहीं दिख रहा कि ऐसी बातें की जा रही हों कि नदियों में हमें साबुन से नहीं नहाएंगे, कुल्ला-मंजन उसमें नहीं करेंगे। शव या शव की राख हड्डियां नहीं डालेंगे, घरों की पूजा सामग्री नहीं डालेंगे, तो हमें मानना होगा कि इन अभियानों का हश्र लगभग वही होने वाला है जो इससे पूर्ववर्तीयों का हुआ है।

– शेष पृष्ठ 2 पर

वेद-स्वाध्याय

इन तीनों की रक्षा हो

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य।। ऋ. 10/185/1

अर्थ—(**त्रीणाम्**) तीन की (**महि दुराधर्षम्**) बहुत सावधानी से (**अवः अस्तु**) रक्षा की जाये। वे तीन कौन हैं—(**मित्रस्य**) स्नेही मित्र एवं प्राण, (**अर्यम्णः**) न्याय करने वाले और उदान, (**वरुणस्य**) दुर्गुणों से बचाने वाले उपदेशक तथा अपान।

मित्र, वरुण, अर्यमा ये तीनों **अदितेः पुत्रासो** (ऋ० १०.१८५.३) अदिति के पुत्र हैं और इनके सम्पर्क में रहने वालों का रोग या शत्रु कुछ भी अहित नहीं कर सकता, यह अगले मन्त्रों में कहा है। ये तीनों अदिति के पुत्र हैं और निरन्तर जीवन ज्योति को देते रहते हैं। अदिति अखण्ड प्रकृति अथवा सूर्य को कहते हैं। प्रकाश या जीवन सूर्य से ही मिलता है अतः मित्र, वरुण, अर्यमा से प्राणादि का ग्रहण करना ही युक्ति संगत है। गौण रूप से मित्र से मित्र, अर्यमा= न्यायाधीश वरुण= दुर्गुणों से बचाने वाले उपदेशक का ग्रहण किया जा सकता है। ये तीनों भी अदिति अर्थात् ज्ञान का प्रकाश करने वाले हैं अर्थात् हितैषी जन हैं अतः इनकी सुरक्षा करनी चाहिये। इन पर क्रमशः विचार करते हैं।

आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध चिकित्सा ग्रन्थ 'चरक संहिता' के वातव्याधि चिकित्सा प्रकरण में वायु के कार्य और प्राण, अपानादि पांच प्राणों का विस्तार से वर्णन किया है। मन्त्र के अर्थ को स्पष्ट करने के लिये वहाँ से प्रकरण को उद्धृत करना उचित रहेगा।

वायुरायुर्बलं वायुर्वायुर्धाता शरीरिणाम्। वायुर्विश्वमिदं सर्वं प्रभुर्वायुश्च कीर्तितः॥ चरक० चि०अ० २८॥

वायु को आयु कहा जाता है। वायु ही शरीर का बल है। वायु ही शरीर के स्वामी आत्मा को धारण करने वाला है। सारा संसार वायु का ही खेल है। इसलिये वायु को सबका प्रभु=स्वामी कहा जाता है। वायु के भेद—प्राण, उदान, समान, व्यान, अपान हैं।

१. प्राणवायु का स्थान एवं कर्म—मस्तक, छाती, कण्ठ, जिह्वा, मुख, नाक, ये प्राण वायु के स्थान हैं। थूकना, छींक आना, डकार आना, श्वास रोग का होना और आहार आदि को आमाशय में पहुँचाना यह प्राण वायु का कार्य है। प्राणवायु का स्थान मुख्य रूप में हृदय में 'शार्ङ्गधर' ने माना है। वैसे सारा शरीर ही प्राण का स्थान है परन्तु नाभि, हृदय और सिर में प्राधान्य रूप में प्राण रहता है।

२. उदान प्राण का स्थान नाभि, वक्षस्थल और कण्ठ है। बोलना, प्रत्येक कार्य में प्रवृत्ति, उत्साह, बल आदि को समुचित रूप में रखना इसका कार्य है। इसके विकृत होने पर श्वास, कास, हिचकी आदि रोग होते हैं।

३. समान प्राण—यह नाभि में रहकर भोजन का पाचन कर उसे सारे शरीर में वितरित करता है।

४. व्यान प्राण—यह सारे शरीर में गतिशील रहता है और हृदय से शुद्ध रक्त को सारे शरीर में प्रवाहित करता है।

५. अपान प्राण—अपान प्राण नाभी से निचले प्रदेश अण्डकोष, मूत्राशय, मूत्रेन्द्रिय, उरु, गुदा आदि स्थानों में रहता है। यह अपान वायु, मल, मूत्र, शुक्र, आर्तव तथा गर्भ को बाहर निकालता है। बड़ी आँत को इसका विशेष स्थान माना है।

यदि ये पाँचों प्राणवायु अपनी स्वाभाविक अवस्था में रहें तो शरीर स्वस्थ रहता है और इनके विकृत हो दूसरे स्थानों पर चले जाने से ८० प्रकार के वात रोगों की उत्पत्ति होती है।

विशेषाज्जीवितं प्राण उदाने संश्रितं बलम्। स्यात्तयोः पीडनाद्धानिरायुषश्च बलस्य च॥ च०चि० २८.२३५॥

प्राण वायु के आश्रित जीवन होता है और उदान वायु के आश्रित बल। प्राण वायु की विकृति होने पर मृत्यु और विकृत हो जाने पर बल की हानि होती है।

उदान वायु के विकृत होने पर चिकित्सकों द्वारा उसे ऊपर ले जाना चाहिये। अपान वायु का अनुलोमक अन्नपान ओषधियों द्वारा अनुलोमन करना चाहिये। समान वायु को शान्त करना चाहिये। व्यान वायु को ऊर्ध्व, मध्य, अधोमार्ग में ले जाना चाहिये और इन चारों वायुओं से प्राणवायु की रक्षा करनी चाहिये।

जहाँ शरीरगत इन प्राणादि वायुओं को विकृत होने से रोकना, विकृत हो जाने पर उनका अनुलोमन और अपने स्थानों पर स्थापन तथा पित्त एवं कफ से आवृत हो जाने पर उनकी चिकित्सा करने से शरीर स्वस्थ रहता है, वैसे ही सामाजिक जीवन में मित्र, वरुण, अर्यमा इनका भी बहुत महत्त्व है।

१. **मित्र**—जैसे हाथ शरीर की और पलकें आँखों की रक्षा करती हैं ऐसे ही जो बिना विचारे ही प्रिय करे उसे मित्र कहते हैं।

शुचित्वं त्यागिता शौर्यं सामान्यं सुखदुःखयोः। दाक्षिण्यंचानुरक्तिश्च सत्यता च सुहृद्गुणाः॥

पवित्र आचरण, त्यागवृत्ति, शूरवीरता, सुख-दुःख में समान भाव, दक्षता, परस्पर का स्नेह और सत्यवादिता ये मित्र के गुण हैं। दुर्जन लोगों की मित्रता प्रातः काल की छाया के समान होती है जो पहले लम्बी और दोपहर में छोटी हो जाती है। सज्जन लोगों की मित्रता सायंकाल के समान होती है जो प्रारम्भ में छोटी और सूर्यास्त होते समय लम्बी हो जाती है।

२. **उपदेशक**—उपदेशक का कार्य दुर्गुणों, दुर्व्यसनों से बचाना और सन्मार्ग दिखलाना होता है। उनका प्रभाव तभी पड़ता है जब उनकी कथनी और करनी एकजैसी हो। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' दूसरों को उपदेश देने वाले तो बहुत मिल जायेंगे जो मीठी बातों को कहने में कुशल हैं परन्तु अप्रिय सत्य का वक्ता और श्रोता दुर्लभ है।

३. **अर्यमा**—विद्वान्, न्याय, धर्म की बात कहने वाला विद्या विनय से सुशोभित व्यक्ति किसका चित्त अपनी ओर आकर्षित नहीं करता जैसे मणि-रत्नों से जड़ा स्वर्णाभूषण सबका ध्यान अपनी ओर कर लेता है। विद्वान् बड़े कुल का होने पर भी कभी गर्व नहीं करता और पानी से आधे भरे घड़े के समान अपण्डित लोग अपनी बड़ाई स्वयं करते हैं।

शरीर-रक्षा के लिये प्राणादि को सम रखना और आचार-विचार की शुद्धि के लिये स्नेही मित्र, गुरु आचार्य, उपदेशक और विद्वान् लोगों की संगति उन्नतिकारक है।

- क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

गंगा-यमुना सफाई अभियान ......

फैक्ट्रियों का सारा कचरा, शहरों का सीवर, गाँवों की नालियों का इन नदियों में डलना तो और भी भयावह सा है- आखिर हम कर क्या रहे हैं? और चाहते क्या हैं?

महर्षि दयानन्द की वो पंक्तियां आज भी याद आती हैं जब उन्होंने कहा था कि मेरी राख/अस्थियां किसी गंगा आदि नदियों में प्रवाहित करने की भूल मत करना और आर्यों को निर्देश दिया था कि वे भी कभी भी ऐसा न करें- कितनी दूरगामी सोच थी महर्षि की।

चलिए- समाधान पर दृष्टि डालते हैं। गंगा और यमुना एक जीवनदायिनी नदियां रही हैं। इसी कारण उत्तर भारत के एक बहुत विस्तृत क्षेत्र के गांव, शहर, फैक्ट्री अदि इसी के आसपास विकसित हुए हैं। गंगा को इसके प्रदूषण से बचाने के लिए कई प्रकार के समाधानों पर चर्चा आरम्भ होनी चाहिए।

पहला - ALTERNATE PROCEDURE FOR WASTE MANAGEMENT - इसके लिए बड़ी-बड़ी नहरी परियोजनाओं के तरीके पर चलते हुए इन नदियों के साथ-साथ बराबर (PARALLEL) बड़े गहरे नाले निर्मित किए जाएं तथा सभी शहरों के सीवर व फैक्ट्रियों से आने वाला कचरा केवल उसमें ही डाला जाए, नदियों में नहीं और इसके 50-100 कि.मी. की दूरी पर विशाल शोधन संयंत्र लगाए जाएं, जो ठोस कचरे को अलग करके उसके विभिन्न उपयोग करें - जैसे - बिजली/खाद बनाने आदि और तरल पदार्थों को आधुनिक विधियों से पूर्ण शोधित करके पुनः नदी में प्रवाहित कर दिया जाए- आखिर इन्हीं सब विधियों से दुनिया की अनेक नदियां आज पवित्रता से प्रवाहित हो रही हैं। लन्दन, पैरिस, वेनिस आदि शहरों में जो कि आबादी और घनत्व की दृष्टि से हमारे कई शहरों से बड़े ही हैं वहां नदियां इतनी साफ हैं कि कभी-कभी यकीन नहीं होता कि नदियां हैं या बनावटी नहरें - आखिर ये कैसे हुआ? ये बिन्दु चर्चा और विचार के लिए है।

दूसरा बिन्दु है - दण्ड व्यवस्था - इन नदियों में किसी भी प्रकार के सामान को प्रवाहित करने पर दण्ड की निश्चित व्यवस्था बना दी जाए। अन्यथा उसके अभाव में इसको पवित्र-सुरक्षित एवं मानवोपयोगी रख पाना न केवल अत्यन्त कठिन है अपितु असम्भव सा है।

तीसरा - सामाजिक जागरूकता :- विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इसको एक विषय के रूप में प्रत्येक कक्षा में हो जिसमें इस विषय के प्रत्येक पहलू बहुत विस्तार से बताया गए हों- निश्चित रूप से इसमें समय लगेगा पर स्थाई समाधान तो मस्तिष्क शोधन ही है। सामाजिक और धार्मिक अभियान चलाने पर जोर और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

प्रोत्साहन/पुरस्कार योजनाएं :- जिन कस्बों/शहरों की नगरपालिकाएं अपने कचरे को नदी तक न पहुंचने देने के लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है उन्हें बड़े पुरस्कारों से सम्मानित किया जाए, तो हम समझते हैं कि इन सब कार्यों/योजनाओं के सामूहिक क्रियान्वयन से हम अपने "गंगा बचाओ अभियान" में कामयाब हो सकेगें। अन्यथा तो नारे लगाने और राजनीति करने के लिए हम इसका उपयोग हमेशा करते रहेंगे।

यदि ये कार्य/तरीके किसी न किसी रूप से पूर्व में ही योजना में है तो इनका प्रभावी क्रियान्वयन निश्चित करना और उसके लिए अलग-अलग प्राधिकरण बनाना व अलग न्यायालयों की व्यवस्था करना भी शामिल है। ये योजनाएं सही हैं या गलत हैं। बन सकेंगी-चल सकेंगी? ये तो सरकारी तन्त्र को विचार करना है- ये सुझाव मात्र हैं किन्तु इन सब उपायों से भी बढ़कर सबसे अधिक आवश्यकता है हम सब भारतवासियों के संकल्प की कि 'मैं कभी भी किसी भी प्रकार का छोटा-मोटा कचरा या टुकड़ा भी इन पवित्र नदियों में नहीं डालूंगा और कोई ये संकल्प लें या न लें किन्तु मुझे आशा है कि इस लेख को पढ़ने वाले पाठक जरूर इस संकल्प को ग्रहण करके अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करेंगे।

- विनय आर्य, सह सम्पादक

गुरु पूर्णिमा 12 जुलाई पर विशेष

सबसे बड़ा गुरु कौन?

– डॉ. विवेक आर्य

आज गुरु पूर्णिमा है। हिन्दू समाज में आज के दिन तथाकथित गुरु लोगों की लॉटरी लग जाती है। सभी तथाकथित गुरुओं के चेले अपने अपने गुरुओं के मठों, आश्रमों, गद्दियों पर पहुँच कर उनके दर्शन करने की होड़ में लग जाते हैं। खूब दान, मान एकत्र हो जाता है। ऐसा लगता है कि यह दिन गुरुओं ने अपनी प्रतिष्ठा के लिए प्रसिद्ध किया है। भक्तों को यह विश्वास है कि इस दिन गुरु के दर्शन करने से उनके जीवन का कल्याण होगा। अगर ऐसा है तब तो इस जगत के सबसे बड़े गुरु के दर्शन करने से सबसे अधिक लाभ होना चाहिए। मगर शायद ही किसी भक्त ने यह सोचा होगा कि इस जगत का सबसे बड़ा गुरु कौन है? इस प्रश्न का उत्तर हमें योग दर्शन (1/26) में मिलता है–

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।।

वह परमेश्वर कालद्वारा नष्ट न होने के कारण पूर्व ऋषि–महर्षियों का भी गुरु है। अर्थात् ईश्वर गुरुओं का भी गुरु है। अब दूसरी शंका यह आती है कि क्या सबसे बड़े गुरु को केवल गुरु पूर्णिमा के दिन स्मरण करना चाहिए। इसका स्पष्ट उत्तर है कि नहीं, ईश्वर को सदैव स्मरण रखना चाहिए और स्मरण रखते हुए ही सभी कर्म करने चाहिए। अगर हर व्यक्ति सर्वव्यापक एवं निराकार ईश्वर को मानने लगे तो कोई भी व्यक्ति पापकर्म में लिप्त न होगा। इसलिए धर्म शास्त्रों में ईश्वर को अपने हृदय में मानने एवं उनकी उपासना करने का विधान है।

ईश्वर और मानवीय गुरु में सम्बन्ध को लेकर कबीर दास के दोहे को प्रसिद्ध किया जा रहा है।

गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो मिलाय।।

गुरुडम की दुकान चलाने वाले कुछ अज्ञानी लोगों ने कबीर के इस दोहे का नाम लेकर यह कहना आरम्भ कर दिया है कि ईश्वर से बड़ा गुरु हैं क्योंकि गुरु ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताता है। एक सरल से उदाहरण को लेकर इस शंका को समझने का प्रयास करते हैं। मान लीजिये कि मैं भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से मिलने के लिये राष्ट्रपति भवन गया। राष्ट्रपति भवन का एक कर्मचारी मुझे उनके पास मिलवाने के लिए ले गया। अब यह बताओ कि राष्ट्रपति बड़ा या उनसे मिलवाने वाला कर्मचारी बड़ा है?आप कहेंगे कि निश्चित रूप से राष्ट्रपति कर्मचारी से कहीं बड़ा है, राष्ट्रपति के समक्ष तो उस कर्मचारी की कोई बिसात ही नहीं है। यही अंतर उस गुरुओं का भी गुरु ईश्वर और ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताने वाले गुरु में है। हिन्दू समाज के विभिन्न मतों में गुरुडम की दुकान को बढावा देने के लिए गुरु की महिमा को ईश्वर से अधिक बताना अज्ञानता का बोधक है। इससे अंध विश्वास और पाखंड को बढ़ावा मिलता है।

पाया गुरु मन्त्र बृहस्पति से,
फिर अन्य गुरु से करना क्या।
की माँग विश्वपति अधिपति से,
फिर और किसी से करना क्या।।
वरणीय वरुण प्रभु वरुपति हों,
अर्य्यमा न्याय के अधिपति हों।
हमको परमेश ईशता दो,
तुम इन्द्र हमारे धनपति हों।।
की याचना इन्द्र धनपति से,
फिर दर दर हमें भटकना क्या।
की माँग विश्वपति अधिपति से,
फिर और किसी से करना क्या।।
अत्यन्त पराक्रम बलपति हो,
तुम वेद बृहस्पति श्रुतिपति हो।
तन मानस का बल हमको दो,
तुम विष्णु व्याप्त जग वसुपति हो।।
की सन्धि शौर्य के सतपति से,
फिर हमें शत्रु से डरना क्या।
की माँग विश्वपति अधिपति से,
फिर और किसी से करना क्या।।
प्रिय सखा सुमंगल उन्नति हो,
हर समय तुम्हारी संगति हो।
बन मित्र मधुरता अपनी दो,
सुख वैभव बल की सम्पति दो।।
मित्रता विष्णु प्रिय जगपति से,
फिर पलपल हमें तरसना क्या।
की माँग विश्वपति अधिपति से,
फिर और किसी से करना क्या।।

(पं. देवनारायण भारद्वाज रचित गीत स्तुति का प्रथम प्रकाश)

गतांक से आगे – अन्तिम भाग

मैं आस्तिक क्यों हूँ?

सर्वव्यापक एवं निराकार ईश्वर में विश्वास से पापों से मुक्ति मिलती है। एक उदाहरण लीजिये एक बार एक गुरु के तीन शिष्य थे। गुरु ने अपने तीनों शिष्यों को एक–एक कबूतर देते हुए कहा कि इन कबूतरों को वहां पर मारना जहाँ पर आपको कोई भी न देख रहा हो। प्रथम शिष्य ने एक कमरे में बंद करके कबूतर को मार डाला, दूसरे ने जंगल में झाड़ी के पीछे कबूतर को मार डाला, तीसरा शिष्य कबूतर को बिना मारे ले आया। गुरु ने तीसरे शिष्य से पूछा कि उसने कबूतर को क्यों नहीं मारा। उसने उत्तर दिया कि मुझे ऐसा कोई स्थान ही नहीं मिला जहाँ पर मुझे कोई देख न रहा हो। हर स्थान पर निराकार और सर्वव्यापक ईश्वर विद्यमान है। ऐसे में मैं कबूतर के प्राण कैसे हर सकता था। गुरु ने उसे शाबाशी दी और कहा कि तुम मेरे पाठ को भली प्रकार से समझे हो।

आज आस्तिकता के नाम पर जितने पाखंड होते हैं वह ईश्वर को सर्वव्यापक और निराकार मानने से नहीं होते। कोई भी व्यक्ति मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर जाता है वह यही समझता है कि ईश्वर केवल उसी स्थान पर है। वहां से बाहर निकलते ही वह ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार कर पापकर्म में लिप्त हो जाता है। जो व्यक्ति हर समय, हर काल में, हर स्थान पर ईश्वर की सत्ता को समझेगा वह कभी किसी भी पापकर्म में लिप्त नहीं होगा। इस कारण से सर्वव्यापक एवं निराकार ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला व्यक्ति अपनी आस्तिकता के कारण पापों से बच जाता है।

ज्ञान के उत्पत्तिकर्ता में विश्वास से ज्ञान प्राप्ति का संकल्प बना रहता है। यह भावना हमें अभिमान और अहंकार से भी बचाती है एवं अपने से अधिक शक्तिशाली, अपने से अधिक बुद्धिमान, अपने से अधिक ज्ञानवान सत्ता में विश्वास होने से हम सभ्य, निर्मल एवं शांत भी बनते हैं। मनुष्य कभी ज्ञान की उत्पत्ति नहीं करता। जो कुछ भी उसे ज्ञान है वह अपने चारों और से देखने, पढ़ने अथवा सुनने आदि से ग्रहण करता है। विद्यार्थी शिक्षक से ज्ञान अर्जित करता है। शिक्षक भी कभी स्वयं विद्यार्थी था। इस प्रकार से सृष्टि के आरम्भ में सबसे पहले मनुष्यों ने ज्ञान की कभी उत्पत्ति नहीं की। उन्हें यह ज्ञान जिस सत्ता ने उपलब्ध करवाया उस सत्ता को हम ईश्वर मानते हैं। वह सत्ता न केवल ज्ञानवान होनी चाहिए अपितु इस सृष्टि में पहले से विद्यमान होनी भी चाहिए और इस सृष्टि के अतिरिक्त अन्य सृष्टियों में भी होनी चाहिए तभी वह ज्ञान देने में सक्षम है। इस तथ्य से यह सिद्ध होता है कि ईश्वर मनुष्य की कल्पना नहीं अपितु यथार्थ अनादि एवं ज्ञानवान सत्ता है और मनुष्य ईश्वर से ज्ञान ग्रहण करता है।

कुछ लोग ईश्वर के होने का साक्षात प्रमाण मांगते हैं। दर्शन ग्रंथों में प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमान, उपमान और आपात आदि प्रमाण बताये गए हैं। अनुमान प्रमाण वहां पर प्रयोग होता है जहाँ पर प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध न हो। सभी जानते हैं कि बिना कर्ता के कोई कारण नहीं होता। इसे समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं। आपके हाथ में एक घड़ी हैं उसे देखकर यह अनुमान लगाना सहज है कि उसे बनाने वाला कोई घड़ीसाज भी तो होगा क्योंकि कोई भी वस्तु का निर्माण बिना निर्माणकर्ता के नहीं हो सकता । वैसे ही इस जगत को देखकर, सूर्य, चन्द्रमा, ऋतुओं आदि को देखकर यह अनुमान लगाना सहज है कि इस सारी व्यवस्था को बनाने वाला, इसे नियम में बांधने वाली कोई शक्ति तो ऐसी है जिसने यह सारी व्यवस्था सिद्ध की है। उसी शक्ति को हम ईश्वर कहते हैं। नास्तिक लोगों का यह कुतर्क कि सब कुछ अपने आप हो रहा है इसके पीछे कोई शक्ति नहीं है गलत है क्योंकि आप स्वयं परीक्षा करके देख लीजिये। एक स्थान पर सुबह से शाम तक एक पत्थर रख कर देखिये वह ऐसे ही पड़ा रहेगा। उसे अपने स्थान से हिलाने के लिए एक चेतन शक्ति की आवश्यकता है उसी प्रकार से इस जगत को चलायमान करने वाली सत्ता का नाम ही तो ईश्वर है।

आस्तिकता के कारण अभयता, आत्मबल में वृद्धि, सत्य पथ का अनुगामी बनना, मृत्यु के भय से मुक्ति, परमानन्द सुख की प्राप्ति, आध्यात्मिक उन्नति, आत्मिक शांति की प्राप्ति, सदाचारी जीवन आदि गुण की आस्तिकता से प्राप्ति होती है एवं स्वार्थ, पापकर्म, अत्याचार, दुःख, राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार आदि दुर्गुणों से मुक्ति मिलती है। नास्तिक लोगों का मानना हैं की मनुष्य यह सब कार्य ईश्वर के भय से करता है। भय मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। निकृष्ट अवस्था में भय की वृद्धि होती है एवं उन्नतशील अवस्था में भय की न्यूनता होती है। उच्च व्यक्ति स्वभाव के प्रभाव से सत्य बोलते है जबकि निकृष्ट व्यक्ति दंड के भय से सच बोलते हैं। ईश्वर विश्वासी व्यक्ति हर स्थान पर, हर समय पाप कर्म करने से बचेगा क्योंकि वह जानता है कि ईश्वर बिना आँख के देखता है और बिना कान के सुनता है। जो ईश्वर से भय करता है वह वस्तुतः किसी से नहीं डरता और न ही नियमों को तोड़ता है। यथार्थ में यह भय नहीं अपितु अभयता है। ईश्वर हमें भय करना नहीं अपितु सचेत करना सिखाती है। महर्षि दयानन्द जी का उदाहरण हमारे समक्ष है जब उन्हें जोधपुर जाने से मना किया गया तो वह बोले कि चाहे मेरी उँगलियों की बत्ती बनाकर जला दी जाएं तो भी मैं सत्य कहने से पीछे नहीं हटूंगा। यह ईश्वर विश्वास के कारण आस्तिक व्यक्ति में पैदा हुई अभयता है न कि ईश्वर का भय है।

कभी–कभी हमें यह शंका होती है कि ईश्वर में विश्वास न रखने वाला नास्तिक व्यक्ति अधिक सुखी है और आस्तिक व्यक्ति अधिक दुखी है। यह वस्तुतः हमारा भ्रम है क्योंकि हम भौतिक पदार्थों को ज्यादा से ज्यादा एकत्र करने वाले व्यक्ति को सबसे बड़ा सुखी मान लेते हैं। सत्य यह है कि जीवन की मूलभूत सुविधाओं को ईमानदारी से एकत्र करने वाला व्यक्ति न केवल अधिक सुखी है अपितु अधिक संतुष्ट भी है जबकि चोरी, भ्रष्टाचार, धोखे आदि द्वारा अपनी आवश्यकता से अधिक सुविधाओं को एकत्र करने वाला व्यक्ति जीवन में कभी सुखी नहीं हो सकता।

ईश्वर विश्वासी व्यक्ति अत्याचारी नहीं होता। क्योंकि नियमों का उल्लंघन करने वाला व्यक्ति वीर नहीं अपितु निर्बल है क्योंकि वह छोटे–छोटे प्रलोभनों का सामना नहीं कर सकता। आस्तिक सभी प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखता है क्योंकि निज स्वार्थ के लिए आस्तिक व्यक्ति किसी को दुःख नहीं देता है। ईश्वर विश्वास का सबसे बड़ा लाभ है कि ईश्वर विश्वास मनुष्य को सत्य मार्ग पर होने के लिए बल देता है। ईश्वर विश्वासी मृत्यु से नहीं डरता क्योंकि वह समझता है कि

– शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में दाऊदयाल आर्य वैदिक सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, नया बांस में

विद्यार्थियों के लिए कार्यशाला सम्पन्न

बच्चों को विद्यालय में उत्तम संस्कार मिलें। अपनी शिक्षा के साथ-साथ सभी बच्चे उत्तम संस्कारों द्वारा अपने जीवन में सफलता प्राप्त करते हुए आगे बढ़ें और देशहित में कार्य करें, ऐसा प्रयास सभी आर्य विद्यालयों में निरन्तर किया जा रहा है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वाधान में दिनांक 7 जुलाई (सोमवार) को दाऊदयाल आर्य वैदिक सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, नया बांस में विद्यार्थियों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में परिषद् के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य जी और महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने बच्चों को ईश्वर के अस्तित्व, स्वरूप व कार्य प्रगति के पथ पर नितांत सहायक एवं आवश्यक सकारात्मक सोच के साथ कार्य करना, सत्य को अपनाने और झूठ को त्यागने, परोपकार के कार्य करना, माता-पिता और आचार्य का बच्चे के जीवन में महत्त्व जैसे विषयों पर व्यावहारिक रूप से उदाहरण देते हुए चर्चा की।

श्री राजसिंह आर्य जी ने वहां उपस्थित सभी विद्यार्थियों को माता-पिता और आचार्य के महत्त्व को बताया। उन्होंने समझाया कि विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में इन तीन देवताओं की अहम भूमिका होती है। सभी विद्यार्थियों को इन तीनों देवताओं का सम्मान करना चाहिए और अभिवादन करना चाहिए। उनके आशीर्वाद से ही बच्चों के जीवन में आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है। बच्चों ने इस कार्यशाला में संकल्प लिया कि वे सदैव अपनी माता-पिता व आचार्यों का सम्मान करेंगे। इसके साथ ही बच्चों को परोपकार के कार्य करने के लिए भी समझाया गया।

श्री विनय आर्य जी ने बच्चों को ईश्वर के अस्तित्व, स्वरूप और कार्यों के बारे में बताते हुए, व्यवहारिक उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने विद्यार्थियों को समझाया कि उन्हें अपने जीवन में सदैव अच्छे कार्य ही करने चाहिए। अच्छे कार्य करने से उन्हें उत्साह, उमंग व प्रसन्नता अवश्य मिलेगी। और गलत कार्य करने में उन्हें शंका, भय और लज्जा का सामना करना पड़ेगा। इसके साथ ही सच्चा मित्र कौन हो सकता है, बच्चों को समझाया।

तीन घंटे चली इस कार्यशाला में बच्चों ने सभी बातों को सुना, समझा और अपने जीवन में उन्हें अपनाने का प्रण भी किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री भास्कर द्विवेदी जी ने परिषद् के अधिकारियों का इस कार्यशाला के आयोजन के लिए धन्यवाद करते हुए कहा कि आजकल बच्चों को नैतिक शिक्षा द्वारा उत्तम संस्कार अवश्य दिये जाने चाहिए और भविष्य में इस प्रकार के कार्यक्रम निरन्तर आयोजित करने के लिए सुझाव दिया। इस अवसर पर श्रीमती वीना आर्या जी, श्रीमती शारदा आर्या जी, विद्यालय के शिक्षक भी उपस्थित थे। *- सरोज यादव, संयोजिका*

सार्वदेशिक सभा अधिकारियों द्वारा झारखण्ड के ऐतिहासिक गुरुकुल देवघर बैद्यनाथधाम का दौरा

सार्वदेशिक सभा के उप पधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी के साथ-साथ आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, झारखण्ड, बिहार सभा के अधिकारियों ने भी 110 वर्ष पुराने ऐतिहासिक गुरुकुल देवघर बैद्यनाथधाम का दौरा किया और इसके जीर्णोधार करने पर गम्भीरता के साथ विचार किया। यह गुरुकुल वर्ष 2009 से बन्द है। इस गुरुकुल की सम्पत्ति रक्षा के लिए महत्तर कार्य करने के लिए मन्त्री श्री भारत भूषण त्रिपाटी जी का सम्मान भी किया गया।

गुरुकुल की पुरानी यज्ञशाला पर समस्त अधिकारी गण सर्वश्री विनय आर्य, धर्मपाल आर्य, प्रकाश आर्य, सुरेशचन्द्र अग्रवाल, गंगा प्रसाद, रमेन्द्र गुप्ता एवं अन्य।

आर्यसमाज रांची द्वारा संचालित वृद्धाश्रम में बुजुर्गों से आशीर्वाद लेते श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, श्री प्रकाश आर्य एवं समाज के प्रधान श्री शत्रुघ्न लाल आर्य जी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर–बैंकॉक – 2014 : एक निमन्त्रण

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर सम्मेलन को स्मरणीय बनाने में सहयोग करें

सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृति सदस्य ही सम्मेलन में भाग ले सकेंगे

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-बैंकॉक 2014

निमन्त्रण

मान्यवर महोदय, सादर नमस्ते।

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आप सब आर्यसमाज व इसके कार्यों से सर्वथा परिचित ही हैं। वर्तमान युग के विख्यात समाज सुधारक, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परमपिता द्वारा प्रदत्त वेद वाणी के प्रचारार्थ एवं मानव कल्याणार्थ आर्यसमाज की स्थापना 1875 में की थी। आर्यसमाज की स्थापना तो मुम्बई में हुई,किन्तु शीघ्र ही यह उत्तर भारत और आहिस्ता-आहिस्ता सारे भारत और लगभग विश्व के 34 देशों में विस्तारित हो गया। लगभग 140 वर्षों से आर्यसमाज की विश्वभर में फैली शाखाएं मानव कल्याण के कार्यों में ईश्वराज्ञा से संलग्न हैं। आर्यसमाज के इस विश्वव्यापी संगठन में और मजबूती आ सके तथा हम और तीव्र गति से अपने विश्व कल्याण के उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ सकें इसके लिये समय-समय पर आपसी विचार-विमर्श बहुत आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सार्वदेशिक सभा ने आर्य महासम्मेलनों की अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला आरम्भ की थी। इस कड़ी में गत 10 वर्षों में भारत, अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हॉलैंड तथा द.आफ्रिका में ये सम्मेलन सम्पन्न हुए हैं जिनमें आपको भी भाग लेने का सौभाग्य अवश्य ही प्राप्त हुआ होगा। सम्मेलनों की इस श्रृंखला में इस वर्ष का सम्मेलन सिंगापुर और थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है जिसमें अनेक देशों से आर्यसमाज के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इन दोनों ही देशों में लगभग 70-80 वर्ष पूर्व आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी तथा आज भी वे मानव कल्याण के कार्य में सक्रियता से जुटे हुए हैं। इन सम्मेलनों के आयोजन से वहाँ के स्थानीय संगठनों को तो मजबूती प्राप्त होती ही है हम सबको भी उन देशों की परिस्थितियों के अनुसार कार्य कर रहे इन संगठनों को देखने और इनके कार्यकर्ताओं से मिलने का अवसर मिलता है। अत: हमारा आपसे निवेदन है कि आप 1 व 2 नवम्बर को सिंगापुर में तथा 8 व 9 नवम्बर को बैंकॉक में होने वाले सम्मेलन में अवश्य ही भाग लेवें।

अधिकतर आर्य महानुभावों की यह इच्छा रहती है कि सम्मेलन के साथ-साथ उन देशों के स्थानों का भी भ्रमण किया जाए। अत: सभा ने दोनों देशों की यात्रा का कार्यक्रम भी साथ में बनाया है। जो आर्य महानुभाव इन यात्राओं का लाभ लेना चाहते हैं उनके लिए पूर्ण विवरण एवं आवेदन-पत्र इस निमंत्रण के साथ संलग्न किया जा रहा है।

सुरेशचन्द्र

(अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य)
(यात्रा संयोजक एवं उपप्रधान सार्वदेशिक सभा)

नोट : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हेतु आवेदन पत्र आप आर्यसमाज की Website www.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

आवेदन पत्र इसी अंक के पृष्ठ 6 पर भी दिया गया है।

सिंगापुर-थाईलैन्ड चलो ☆ ☆ ☆ सिंगापुर- थाईलैन्ड चलो

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-थाईलैन्ड 2014

सिंगापुर में 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को • बैंकाक में 8 तथा 9 नवम्बर 2014 को

7 जुलाई 2014

सम्माननीय आर्यबन्धुओ !

सादर नमस्ते। आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को सिंगापुर में तथा 8 और 9 नवम्बर 2014 को थाईलैन्ड की राजधानी बैंकाक में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि सिंगापुर तथा बैंकाक पहुँचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजनों के पहुँचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही सिंगापुर तथा थाईलैन्ड की प्रतिनिधि सभाऐं अपने यहाँ प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेंगी।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर दक्षिण पूर्व एशिया महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए सिंगापुर तथा थाईलैन्ड के अत्यन्त रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है जिसकी जानकारी निम्न प्रकार है :

भव्य सिंगापुर-थाईलैन्ड यात्रा (11 रात्रि 12 दिन)
30 अक्टूबर से 11 नवम्बर 2014 तक
प्रस्थान : दिनांक 30 अक्टूबर 2014 की रात्रि को दिल्ली से/मुंबई से सिंगापुर के लिये प्रस्थान
वापिसी : दिनांक 11 अक्टूबर 2014 को बैंकाक से भारत के लिये वापिसी

-: कार्यक्रम :-

31 अक्टूबर से 4 नवम्बर	सिंगापुर (5 रात्रि)
5 नवम्बर से 6 नवम्बर 2014	पटाया(2 रात्रि)
7 नवम्बर से 10 नवम्बर 2014	बैंकाक (4 रात्रि)
11 नवम्बर 2014	भारत वापिसी

सिंगापुर में आर्य महासम्मेलन 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को है तथा बैंकाक में 8 तथा 9 नवम्बर 2014 को है। बाकी सभी दिनों में सिंगापुर, पटाया तथा बैंकाक के सभी विश्व प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों को दिखाया जायेगा। **इस यात्रा की कुल व्यय राशि प्रति व्यक्ति ₹ 98,500/- निश्चित की गई है** जिसमें हवाईजहाज की अंतर्राष्ट्रीय टिकटें, वीसा, इन्श्योरेन्स, सभी स्थानों पर आने-जाने की वाहन व्यवस्था, नास्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि के सभी खर्चे शामिल हैं।

कुछ आवश्यक सूचनाऐं

(A) सभी यात्रियों को एडवांस राशि के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ तथा अन्तिम दो पृष्ठों की जेरोक्स कापी अवश्य भेजनी है। संलग्न आवेदन -पत्र पर सम्बन्धित आर्यसमाज के पदाधिकारीयों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है। एडवांस राशि प्राप्त होने के बाद COX & KINGS LTD. द्वारा आपको वीसा सम्बन्धी तथा अन्य सभी सूचनाऐं भेज दी जायेंगी।

(B) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 5 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य, उपप्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य श्री प्रकाशजी आर्य- महामंत्री, सार्वदेशिक सभा, श्री राजसिंहजी आर्य- प्रधान, दिल्ली सभा, श्री धर्मपालजी आर्य- वरिष्ठ उपप्रधान, दिल्ली सभा तथा श्री विनय आर्य- महामंत्री, दिल्ली सभा हैं।

(C) यात्रा खर्च में 70 वर्ष तक के यात्रियों का बीमा खर्च शामिल है। 70 वर्ष से अधिक आयु वाले यात्री को अतिरिक्त बीमा खर्च ट्रेवल कं. को देना होगा अथवा उस यात्री को अपना बीमा स्वयं कराना होगा

(D) यह यात्रा विश्व विख्यात ट्रैवल एजेन्सी COX & KINGS LTD. द्वारा आयोजित की गई है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

विशेष : (1) पृष्ठ 2 पर दर्शायी गई यात्रा-व्यय राशि का पूर्ण भुगतान 31/08/2014 तक करना आवश्यक होगा।

(2) सिंगापुर तथा थाईलैन्ड के लिये प्राय: प्रत्येक यात्री को वीसा मिला जाता है लेकिन दुर्भाग्यवश किन्हीं विशेष कारणों से यदि किसी यात्री को वीसा नहीं मिलता है तो वीसा चार्जेज तथा एअर टिकिट के कैन्सीलेशन चार्जेज (नियमानुसार) को कम करके ही शेष राशि यात्री को लौटाई जायेगी।

(3) **ध्यान रहे कि इस यात्रा के लिये आपके पासपोर्ट की वैधता (Validity) 15/05/2015 तक होनी आवश्यक है।**

(4) यात्रा की बुकिंग होने के पश्चात यदि किसी यात्री का कार्यक्रम साधारन परीस्थिति में अथवा विशेष आकस्मिक परिस्थिति में स्थगित होता है तो उसे उसका पैसा जिन नियमों के अन्तर्गत वापस किया जायेगा, वे सभी नियम शीघ्र ही अलग से Email द्वारा अथवा SMS द्वारा सभी यात्रियों को भेज दिये जायेंगे।

कृपया उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते है :

1.	श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य	मो. 98240 72509
2.	श्री विनय आर्य	मो. 99581 74441
3.	ब्र. राजसिंह आर्य	मो. 9350077858

एक अद्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2014 तथा अविस्मरणीय सिंगापुर तथा बैंकाक की यात्रा की आशा और विश्वास के साथ -

भवदीय

(प्रकाश आर्य)
मो. 09826655117

सुपर स्टार जैमिनी शिप द्वारा अत्यन्त रोमांचक क्रूज यात्रा

(2 रात तथा 3 दिन की समुद्री सैर)

2 रात तथा 3 दिन की इस समुद्री यात्रा को आप कभी भी भुला नहीं पायेंगे। सुपर स्टार जैमिनी क्रूज में आपको रोमांचित तथा प्रफुल्लित कर देने वाले ऐसे अनेकों कार्यक्रम मिलेंगे जो आपको 24 घन्टे व्यस्त रखेंगे। सुबह से लेकर रात तक नि:शुल्क खाना-पीना और घूमना-फिरना आपको हमेशा याद रहेगा। **इस क्रूज यात्रा के लिए आपको दिल्ली / मुंबई से 28 अक्टूबर 2014 की रात्रि को प्रस्थान करना होगा।**

क्रूज यात्रा का अतिरिक्त व्यय ₹ 21000/- प्रति यात्री होगा

सिंगापुर से प्रस्थान :	29 अक्टूबर 2014 की शाम को
वापसी :	31 अक्टूबर 2014 को दोपहर में

नोट : दिवाली सीजन के कारण स्टार क्रूज के लिये केवल 50 केबिन (Sea View वाली) ही उपलब्ध हो पायी हैं। अत: जिन 100 यात्रियों (50×2) की स्वीकृति एडवान्स राशि के साथ सर्व प्रथम प्राप्त हो जावेगी उन्हें ही इस क्रूज-यात्रा में ले जाना सम्भव हो सकेगा।

इसलिये निवेदन है कि जिन यात्रियों को क्रूज यात्रा भी करनी है उन्हें प्रतियात्री ₹ 98,500/- + ₹ 21000/- = ₹ 1,19,500/- का भुगतान करना है तथा जिन्हें क्रूज यात्रा नहीं करनी है उन्हें प्रतियात्री केवल ₹ 98,500/- का भुगतान करना है।

क्रूज में शामिल होने वाले यात्री कृपया इस पत्र के प्राप्त होते ही बुकिंग राशि ₹65,000/- का बैंक ड्राफ्ट COX & KINGS LTD. के नाम Payable at Mumbai 25 जुलाई 2014 तक निम्न पते पर भेज दें।
इसी प्रकार क्रूज यात्रा में शामिल न होने वाले यात्री कृपया ₹ 55,000/- की बुकिंग राशि का बैंक ड्राफ्ट COX & KINGS LTD. के नाम Payable at Mumbai 31 जुलाई 2014 तक निम्न पते पर भेज दें।
शेष राशि का भुगतान (क्रूज वालों के लिये ₹ 54,500/- तथा क्रूज में न जाने वालों के लिये ₹ 43,500/-) 31 अगस्त 2014 तक निम्न पते पर भेजना अनिवार्य होगा ।

अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य
यात्रा संयोजक - अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2014
12, रॉयल क्रीसैन्ट, पलतेज
अहमदाबाद-380059
मो.9824072509
निवास: 079-26858338

पृष्ठ 3 का शेष

मैं आस्तिक क्यों हूँ?......

मृत्यु के समय भी ईश्वर का करुणामय हाथ उसके ऊपर है। ईश्वर विश्वास मनुष्य को सत्य नियम पालन की प्रेरणा देते हैं जिससे परमानन्द की प्राप्ति होती है। ईश्वर विश्वास मनुष्य को यम-नियम का पालन करने की शक्ति देता है जिससे मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति होती है। ईश्वर विश्वास से सदाचार की प्रेरणा एवं उससे आत्मिक शांति प्राप्त होती है। ईश्वर विश्वास हमें यह अंतर बताता है कि बाह्य विषय और सुख शरीर के जीवनयापन की पूर्ति के लिए है न कि जीवन का उद्देश्य है। ऐसा नहीं है कि ईश्वर विश्वासी व्यक्ति को कभी दुख का सामना नहीं करना पड़ता। दु:ख होने के अनेक कारण हैं जैसे आध्यात्मिक, अधिभौतिक एवं आधिदैविक मगर ईश्वर में विश्वास से आस्तिकता से मनुष्य को अंतरात्मा में इतना बल मिलता है इतनी शक्ति मिलती है कि पहाड़ के समान दु:ख का भी वह आसानी से सामना कर लेता है। ईश्वर में आस्तिकता मनुष्य को जीवन का उद्देश्य सिखाती है क्योंकि मनुष्य न जगतकर्ता बन सकता है न कर्म फल दाता बन सकता है, न ही अनादि सच्चिदानन्द बन सकता है किन्तु सच्चिदानन्द अवश्य बन सकता है और इसे ही मुक्ति कहते है, यही मनुष्य का अंतिम ध्येय है। **- समाप्त**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्पेलन 2014 हेतु आवेदन - पत्र

श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य
यात्रा संयोजक - अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2014
12, रॉयल क्रोसैन्ट, पलतेन
अहमदाबाद-380059
मो. 98240 72509
निवास : 079-26858338

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2014 में भाग लेने जाना चाहता हूं/चाहती हूं। इस संबंध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है :

नाम:______________ पिता/पति का नाम:______________

आयु:______ जन्म दिनांक : ____________ व्यवसाय :______________

स्थाई पता : ______________________________

____

टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : ______________ ई.मेल :______________

मैं आर्यसमाज______________ का/को सदस्य हूं।

मेरा पासपोर्ट______________ तक के लिए वैध है।

मेरा पासपोर्ट नम्बर ______________ है।

मै सम्मेलन के अतिरिक्त स्टार क्रूज का भी भ्रमण करना चाहता हूं/चाहती हूं। अत : मैं अग्रिम धनराशि के रूप में ₹ 65,000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें। मैं 31/08/2014 से पूर्व यात्रा-व्यय की शेष राशि अवश्य भिजवा दूंगा/दूंगी।

अथवा

मैं स्टार क्रूज में सम्मिलित नहीं होना चाहता/चाहती हूं। अत: मैं अग्रिम धनराशि के रूप में ₹ 55,000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें। मैं 31/08/2014 से पूर्व यात्रा-व्यय की शेष राशि अवश्य भिजवा दूंगा/दूंगी।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

दिनांक : ______________

भवदीय/भवदीया

(आवेदक के हस्ताक्षर)

आवेदन पत्र सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर भी उपलब्ध है।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का चिन्तन शिविर नये संकल्प के साथ सम्पन्न

गुजरात की आर्यसमाजों के सदस्यों में आध्यात्मिक, सैद्धान्तिक व सांगठनिक चेतना के उद्देश्य से पिछले वर्ष से चिन्तन शिविरों का प्रारम्भ किया गया है। उसी क्रम का द्वितीय शिविर 20-21-22 जून 2014 को आयोजित किया गया। शिविर स्थान ऋषि जन्म भूमि स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा रखा गया।

शिविर में निम्न विषयों का प्रशिक्षण दिया गया। (1) आर्यसमाज के नियम व उपनियम और आर्यसमाज के पदाधिकारियों की जिम्मेदारियां। (2) वैदिक धर्म के सार्वभौमिक व सार्वकालिक सिद्धान्त। (3) आर्यसमाज व उसके क्रियाकलापों में अनुशासन। (4) पंच महायज्ञ अर्थात् कर्त्तव्य पालन। (5) बालकों व युवकों को आर्यसमाज की ओर प्रेरित करने के उपाय। (6) आर्यसमाज के सेवा प्रकल्प।

शिविरार्थियों का प्रशिक्षण आरम्भ होने से पूर्व उनकी पूर्वज्ञान कसौटी ली गई। इसी प्रकार शिविरान्त कसौटी भी ली गई। शिविरार्थियों को तत्काल विषय देकर उनकी सैद्धान्तिक जानकारी की भी कसौटी ली गई। इससे उनकी निर्णय शक्ति का भी परिचय प्राप्त हुआ।

पूरे शिविर में मार्गदर्शन के लिए आचार्य सत्यजित् जी आर्य (रोजड़), आचार्य रामदेव शास्त्री (टंकारा), पं. रामस्वरूपजी (अजमेर), डां. कमलेश कुमार शास्त्री (अहमदाबाद), श्री प्रकाश आर्य (मंत्री, सार्व.सभा) श्री वाचोनिधि आर्य (गांधीधाम) एवं प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी अग्रवाल ने अपना समयदान दिया।

शिविर में ध्यान- उपासना व जिज्ञासा समाधान की कक्षाएं भी रखी गई जिसमें भाग लेने के लिए स्थानीय लोगों को भी निमंत्रित किया गया। शिविरार्थियों को यज्ञ (अग्निहोत्र) प्रक्रिया में एकरूपता का भी मार्गदर्शन दिया गया।

टंकारा ट्रस्ट के मंत्री आदरणीय श्री रामनाथ जी सहगल के विशेष निर्देश पर सभी शिविरार्थियों का ट्रस्ट की ओर से शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। श्री सहगल जी ने सभी को फोन पर बधाई दी। शिविर के समापन पर शिविरार्थियों से व्रतपत्र भरवाये गये एवं मौखिक व लिखित रूप में प्रतिभाव भी मांगे गये। शिविर हर तरफ से सफल रहा।

- हसमुख परमार, सभामंत्री

गौरक्षा एवं गौचर भूमि की मुक्ति के लिए धरना

लगभग पिछले चार मास से (22 फरवरी 2014) हरियाणा के सुप्रसिद्ध संत श्री गणेशदास जी महाराज के तत्त्वावधान में गौरक्षा एवं गौचर भूमि की मुक्ति के लिए अपने सहयोगियों व बीस गाय चार बैल चार बछड़े-बछड़ियों सहित जन्तर मन्तर पर धरने पर बैठे हैं। समस्त गौभक्तों एवं गौपालकों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में अपनी सुविधानुसार किसी भी दिन पहुंचकर स्वामी जी को शारीरिक एवं मानसिक सहयोग प्रदान करें। आपके सहयोग की प्रतीक्षा में

भगतसिंह खटाना

संरक्षक, आर्य कन्या गुरूकुल हसनपुर जिला पलवल हरियाणा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक सेवा

आर्यसमाजें सभा की इस सेवा लाभ उठाए

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग की ओर से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक भेजने का कार्य नियमित रूप से होता है। ऐसी समस्त आर्यसमाजें जहां उपदेशक/भजनोपदेशक नियमित रूप से नहीं आते हैं, और वे विद्वानों को आमन्त्रित करना चाहते हैं। उनसे निवेदन है कि वे अपने साप्ताहिक सत्संगों पर उपदेशक आदि बुलाने के लिए सभा के अन्तर्गत संचालित वेद प्रचार विभाग के **सहायक अधिष्ठाता आचार्य ऋषिदेव आर्य जी से मो. 9540040388** पर सम्पर्क करें। आचार्य जी द्वारा आपकी आर्यसमाज/संस्थान के लिए आगामी छह मास के साप्ताहिक सत्संग निर्धारित किए जा सकेंगे।

-विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

प्रथम पृष्ठ का शेष

8. आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद प्रचार समारोह की तिथियां निश्चित करलें और संगीतकारों, भजनोपदेशकों तथा वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करें।

9. आर्यसमाज के अधिकारियों से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी **14 अगस्त** को **हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस विजय दिवस** के रूप में धूमधाम से मनाएं। श्रावणी उपाकर्म, एवं सामूहिक यज्ञोपवीत परिवर्तन का विशेष रूप से आयोजन करें।

अपने आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ **'आर्य सन्देश'** में अवश्य भेजें।

- ब्र0 राजसिंह आर्य, प्रधान

निःशुल्क जांच व चिकित्सा परामर्श शिविर सम्पन्न

आर्य समाज अलवर की ओर से रविवार को स्वतंत्रता सेनानी छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल में चिकित्सा एवं जांच शिविर लगाया गया। शिविर में 250 पंजीकृत रोगियों की जांच कर चिकित्सा परामर्श दिया गया। यहां शुगर और हीमोग्लोबिन की निःशुल्क जांच की गई। वहीं यूरीन, थायराइड, लिपिड प्रोफाइल, लीवर फंक्शन, किडनी फंक्शन, एक्सरे आदि जांच रियायती दर पर कराई गई। शिविर में डॉ. देशबन्धु गुप्ता, डॉ. डीडी शर्मा, डॉ गोपाल गुप्ता, एवं होम्योपैथी के डॉ. बीएल सैनी ने रोगियों का उपचार किया। इस मौके पर अमर मुनि, जगदीश गुप्ता, कैप्टन रघुनाथ सिंह, अशोक आर्य, प्रमोद आर्य, सौरभ आर्य, रामनारायण सैनी, शिवकुमार कोशिक, सुनील गुप्ता, रमाकान्त बंब, हेमराज कल्ला, अजीत यादव, सत्यपाल आर्य, हरीश अरोड़ा, धर्मवीर आर्य, कमला शर्मा, सुमन आर्य, ईश्वर देवी, विमलेश शर्मा, दिवीशा आर्य मौजूद थीं। – *मन्त्री*

'हिन्दी की दशा एवं दिशा' संगोष्ठी तथा सम्मान समारोह

रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना के लिए मुहिम शुरू

आर्यसमाज बिहारीपुर द्वारा बरेली कालेज में 1 जून को 'हिन्दी की दशा एवं दिशा' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव में रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग स्थापित करने की मांग की गई। इस अवसर पर मारिशस के वरिष्ट साहित्यकार प्रहलाद रामशरण ने अपने भाषण में फ्रेंच और अन्य भाषाओं के वर्चस्व वाले मारिशस में भारतवंशियों द्वारा हिन्दी और भोजपुरी भाषाओं को स्थापित करने के लिए किये गए संघर्षों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनके द्वीप-राष्ट्र में हिन्दी को जीवित रखने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका आर्यसमाज की रही है।

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिन्दी हमें हमारी जड़ो से जोड़ती है। मन को मात्र भाषा ही स्पर्श कर सकती है।

राजा रणंजय सिंह महाविद्यालय (अमेठी) के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कहा स्वामी दयानंद तथा आर्यसमाज ने विभिन्न प्रान्तों के लोगों को हिन्दी से जोड़कर राष्ट्रीय एकता की नीव को मजबूत किया था। द्रौणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल (देहरादून) की आचार्य डॉ. अन्नपूर्णा ने सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने की हिन्दी की क्षमताओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर आचार्य विशुद्धानन्द स्मृति देववाणी शोध एवं विकासपीठ द्वारा प्रो. महावीर अग्रवाल को 'आचार्य विश्वश्रवाः व्यास स्मृति वेद रत्न सम्मान', प्रहलाद रामशरण को 'पं. बिहारीलाल शास्त्री स्मृति आर्य साहित्य रत्न सम्मान', पो. ज्वलंत कुमार शास्त्री को 'आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र स्मृति विद्वत रत्न सम्मान', डॉ. अन्नपूर्णा आचार्य को 'डॉ. सावित्री देवी शर्मा स्मृति आर्य वेदभारती सम्मान' तथा श्री गोपालाचार्य जी को 'महात्मा गोपाल सरस्वती हिन्दी काव्य रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आचार्य डॉ. श्वेतकेतु शर्मा द्वारा सम्पादित 'बरेली की आर्य विभूतियां' पुस्तक के द्वितीय संस्करण का लोकार्पण भी किया गया। – *मन्त्री*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज दयानन्द विहार दिल्ली-110092

प्रधान : श्री शिव दयाल आर्य
का.प्रधान : श्री सुभाष बत्रा
मन्त्री : श्री ईश नारंग
कोषाध्यक्ष : डॉ. आशा मेहता

आर्यसमाज अशोक नगर नई दिल्ली-110018

प्रधान : श्री चतुर्भुज अरोड़ा
मन्त्री : श्री प्रकाशचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री ओम प्रकाश चावला

आर्यसमाज डोरी वालन (किशनगंज) नई दिल्ली-5

प्रधान : श्री वागीश शर्मा ईसर
मन्त्री : श्री वेदपाल शास्त्री
कोषाध्यक्ष : श्री दिनेश मल्होत्रा

आर्यसमाज मुल्तान देव नगर नई दिल्ली-5

प्रधान : श्री नफे सिंह देसवाल
मन्त्री : श्री रमेश बेदी
कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र दीवान

आर्यसमाज शहर बड़ा बाजार सोनीपत (हरियाणा)

प्रधान : श्री सुभाष चांदना
मन्त्री : श्री प्रवीण आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री दीपक तलवाड़

आर्यसमाज विदिशा (म.प्र.)

प्रधान : श्री सुरेन्द्र सिंह गुप्त
मन्त्री : श्री केदारनाथ चौरसिया
कोषाध्यक्ष : श्री अनुराग श्रीवास्तव

आर्य दैनन्दिनी (डायरी) का प्रकाशन

आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर प्रकाशित करता है। कई विद्वानों के नम्बर बदल गए हैं, अतः आपसे निवेदन है कि आप 30 अगस्त 2014 तक अपने नाम के साथ अपना नया दूरभाष व पता भेजें, जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सकें।

– *संजीव आर्य (प्रबन्धक)*
आर्य प्रकाशन, 814 कूण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखण्ड- 249404

हिमालय की मनोहर उपत्यकाओं में स्थित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालया हरिद्वार, प्राच्य एवं आधुनिक विद्याओं का प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। स्नातक स्तर पर वेदालंकार एवं विद्यालंकार(बी.ए. समकक्ष) तथा एम.ए. में वेद, संस्कृत, दर्शन तथा प्राचीन भारतीय इतिहास आदि विषयों मे प्रवेश हेतु आवेदन उपलब्ध हैं। वेद, संस्कृत तथा दर्शन विषय के छात्रों के लिए निःशुल्क छात्रावास तथा वेदालंकार एवं वेद विषय में एम.ए. के योग्य छात्रों के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। विस्तृत विवरण विश्वविद्यालय की वैबसाइट www.gkv.ac.in पर देखा जा सकता है।- *कुल सचिव*

महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

पो. टंकारा, जिला- राजकोट (गुजरात) - 363650

प्रथम पाठ्यक्रम महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवी कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम है।

द्वितीय पाठ्यक्रम में उपदेशक कक्षाऐं चलती हैं। जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढ़ाए जाते हैं। भजन, प्रवचन, तथा कर्मकांड विशेष रूप से सिखाकर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक आर्यसमाजों के अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं। दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्यसमाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो ज्यादा उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए आचार्य जी से पत्र-व्यवहार द्वारा जानकारी प्राप्त करें।- **आचार्य रामदेव शास्त्री**

श्रद्धानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, परली-वैजनाथ, बीड (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित 'स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल महाविद्यालय' में पांचवी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली नहर के वैद्यनाथ मंदिर से 2 कि.मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विद्यमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्ष पाठ्यक्रम चलाया जाता है जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान आदि विषयों का अध्यापन होता है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जायेगा। अतः अपने बच्चों को सुसंस्कारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलायें। सम्पर्क करें-

आचार्य प्रवीण (8855080632), **विज्ञानमुनि** (9975375711), **डॉ. ब्रह्ममुनि** (9421951904)

पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय

आर्य समाज परली द्वारा संचालित गुरुकुल आश्रम नंदागौड मार्ग, परली में 'पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय' में प्रवेश आरम्भ हैं। न्यूनतम 9 वीं उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। तीन वर्षो का पाठ्यक्रम है जिसमें विद्यार्थियों को वैदिक सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया जाता है। भविष्य में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु उपदेशक, व्याख्याता, भजनोपदेशक, पुरोहित आदि तैयार करना यह इस महाविद्यालय का उद्देश्य है। प्रत्येक वर्ष पांच छात्रों को इस महाविद्यालय में निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। भोजन, निवास तथा शिक्षा भी निःशुल्क होती है। प्रवेश हेतु मन्त्री से सम्पर्क करें।

आर्य वानप्रस्थ आश्रम

अपनी आयु के 50-60 वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों से मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नौकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड-(महा.) में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं। सम्पर्क करें -

डॉ. ब्रह्ममुनि (9421951904)

विशिष्ट संस्कृत ग्रन्थ अध्ययन केन्द्र में कक्षाएं आरम्भ

दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा इस वर्ष विशिष्ट संस्कृत ग्रन्थ अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत योग एवं वैदिक चिकित्सा विज्ञान, मर्म विज्ञान एवं मर्म चिकित्सा, आयुर्वेद व फिजियोथैरेपी, ज्योतिष प्रशिक्षण, कर्मकाण्ड पौरोहित्य प्रशिक्षण, विशिष्ट संस्कृत प्रशिक्षण और विशिष्ट उपनिषद् (ईश, केन आदि) की प्रशिक्षण कक्षाएं दिल्ली संस्कृत अकादमी, प्लाट नं. 5, झण्डेवालान, करोल बाग नई दिल्ली में आयोजित की जा रही है। पंजीकरण शुल्क 500/- रुपये प्रति पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है। केन्द्र में प्रवेश लेने के इच्छुक प्रतिभागी अकादमी की वैबसाइट/ अकादमी कार्यालय से आवेदन पत्र एवं सम्बन्धित सूचना प्राप्त कर सकते हैं। प्रवेश पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा। - *डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सचिव*

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 14 जुलाई, 2014 से रविवार 20 जुलाई, 2014
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17/18 जुलाई, 2014
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 जुलाई, 2014

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से आर्यसमाज के आजीवन सेवाव्रती आर्यजनों, विद्वानों, भजनोपदेशकों के लिए

माता बुद्धिमति आर्या स्वास्थ्य बीमा योजना

1. यह योजना उनके लिए है जिन्होंने विद्या ग्रहण करने के पश्चात् आजीवन ब्रह्मचारी रहते हुए आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं।
2. इस योजना के भागीदार वे तब तक रहेंगे जब तक वे विवाह नहीं करते एवं नौकरी नहीं करते।
3. किसी भी प्रार्थना पत्र को स्वीकृति अथवा अस्वीकृति करने का अंतिम निर्णय सभा अथवा उसके द्वारा नियुक्त उपसमिति का होगा।
4. बीमा की शर्तें एवं नियम सम्बधित बीमा कंपनी के लागू होंगे।

यदि आप या आपके कोई परिचित इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य बीमा योजना से लाभान्वित होना चाहते हैं तो नीचे दिए गए प्रोफार्मा को ए–4 कागज पर टाइप कराकर निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें। प्रोफार्मा सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर भी उपलब्ध है।

– ऋषिदेव आर्य, सहायक अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड नई दिल्ली – 110001
Email : daps.rishidev@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

अब यू–ट्यूब पर देखें अपने आर्यसमाज के कार्यक्रम

अब आप आर्य समाज के सभी कार्यक्रमों के वीडियोज को youtube पर भी देख सकते हैं इन वीडियोज को देखने के लिए आप www.youtube.com/user/thearyasamaj इस पर जाएं। आप भी अपनी आर्यसमाज वीडियोज youtube पर अपलॉड करें। अधिक जानकारी के लिए श्री नितिन वर्मा से 011–23360150, 23365959 मो. 8802679859 पर सम्पर्क करें। ***– विनय आर्य, महामन्त्री***

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से
माता बुद्धिमति आर्या स्वास्थ्य बीमा योजना
प्रोफार्मा

नाम :– ....
जन्मतिथि :– ....
उचांई :– ....
आवेदक का फोटो
स्थायी पता :– ....
राज्य :– ....
जिला :– ....
पिनकोड : – ....
पोस्ट ऑफिस :– ....
आजीवन कार्य करने की दीक्षा लेने की तिथि :– ....
मोबाइल नंबर :– ....
सम्बंधित गुरुकुल/संस्थान का नाम(जिसमें पढ़ाई की हो) :– ....
माता का नाम :– ....
पिता का नाम :– ....
अपना संक्षिप्त परिचय :– ....
....
....
(आवेदक के हस्ताक्षर)
दिनांक : ....
स्थान : ....

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी
MDH
हवन सामग्री
मात्र 70/– किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग में)
–: प्राप्ति स्थान :–
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -1, दूरभाष - 23360150

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह